गोरख बानी

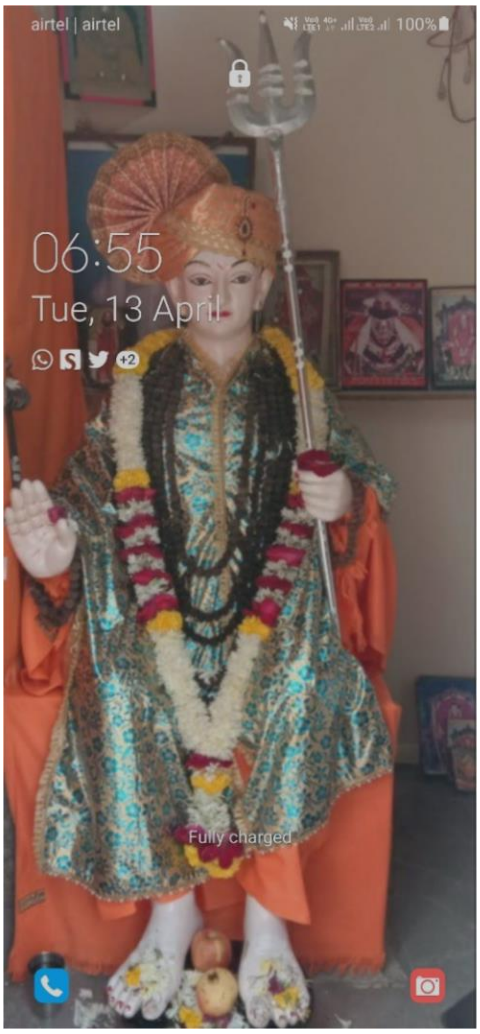

ज़िन्दगी

गम हैं इतने की,
आसां नहीं ज़िन्दगी ।
हर पल विचारों की,
उलझन है ज़िन्दगी ।
कभी सोचूं की,
तेरा प्यार है ज़िन्दगी ।
कभी लगता है,
बेजान है ज़िन्दगी ।
मोड़ इतने की,
हर मोड़ है ज़िन्दगी ।
ठहरना चाहूं तो,
ठहरने का नाम न ले ज़िन्दगी ।
खड़ा किनारों पे,
देख रहा ज़िन्दगी ।
कब तुफान आए,
बिखर जाए ज़िन्दगी ।

01-04-1998, **जिंदगी**

Is Not It?

In the Kalyani Training Centre, we all came together

With best of our feeling, to get the BSNL Training

Manoj was my roommate, that was my BSNL fate

He was smart and quiet, and so Sarkar's favourite

There was a boy Ronel, whose aim was final

To open a poultry farm, With his all money & charm

There was a Shubhasis Paul, Such a great pal

He does hard study, to give us all material ready

One was Gurupad Mandal, He was not bundle

With a zeal to fight, to make Arup right

Arup was not stake, but he always wants a break

He was in all full session, but was always in tension

There was Avijeet Das, He was very "Udas"

He came from Siligudi, He got no "kudi"

गोरख बानी

Prabal Jyoti Brahma, With his karma

He got all history, From knowledge of Palmistry

There was Jayanta Kumar Das, Our fat Boss

He was always in masti, With cigarette, pan & shurti

Ravi Sheel Verma, He does great drama

"Kahin Pe Nigahen, Kahin Pe Nishana"

There was Supriyo Mukherjee, He was very clergy

As our Batch 01 monitor, He always speaks louder

Ashim and Saumen, Were such human

Being room-partner, always sit in corner

Dominique was very light, as he was very quiet

Tapor was very fantastic, but his formalities go hectic

Jayanto Ray, Has nothing to say

With his marks, He was always first-class

Arupa and Dolcy, they were no fancy

They were only gal, With Pahadi as pal

गोरख बानी

We came on 26th November, Leaving on 21st December

We all got new energy, Modulated by "Sir Amit Mukherjee"

: -created on dated 20/12/2001

FIRST BATCH 01 OF 19 BSNL JTOs,

Orientation Training at Kalyani Training Centre, BSNL, West Bengal

P.S.: - "Is Not It?" was the Sir Amit Mukherjee's teaching style after every pause□□, hence the heading of my first BSNL English poem dedicated to batch mates.

हिना

हिना बांटने वालों की, रंग जाती है हाथ
हस्ती मिटती नहीं, मिट जाने के साथ
अगर है चाहत, लोग रखें तुम्हे याद
बन जाओ हिना, याद आओगे मिट जाने के बाद
मिट कर और, निखर जाती है हिना
प्रीतम का एहसास, कराती उसके बिना
अधरों पे मुस्कान खिलाती, दिलाती प्रीतम की याद
रंग लाती है हिना, सूख जाने के बाद।

26-01-2016

गोरख बानी

शून्य

शून्य है जगत, शून्य को प्राप्त तथागत।
शून्य को ही प्राप्त, शून्य होने की ताकत।
शून्य ब्रह्म की शुरूवात, शून्य ही है सर्वव्याप्त।
शून्य करता अहं समाप्त, जीव होता शून्य प्राप्त।
जगत का आधार शून्य, शून्य ही जीवन का मूल्य।
प्रकाश का स्रोत शून्य, शून्य प्राप्त होना अतुल्य।
जीवन का सार शून्य, ज्ञान का आधार शून्य ।
प्रयास कर दुःख करने को शून्य , इसी प्रयास की शिक्षा का है मुल्य।
शून्य को न समझना, है वजह जीवन-चक्र में उलझना।
माया का है यह सपना, जीवन को शून्य से परे रखना।
शून्य का पूर्ण ज्ञान, देता इंसान को माया का भान।
माया कितनी भी करे हैरान, शून्यता नहीं होने देती परेशान।
शून्य है प्रेम की पहचान, क्योंकि प्रेम को शून्य अभिमान ।
प्रेम है ईश्वर का वरदान, ईश्वर (शून्य) की पूर्णता महान।

10-09-2017

दिवाली विशेष

राम महिमा को शिव ने की अद्‌भुत माया,
मरीच स्वर्ण मृग बन छलने आया।
बुद्धि छल सीता के मन को भाया,
स्वर्ण मृग लेने राम को पठाया।
शिव इच्छा जान राम ने धनुष उठाया,
सिय रक्षा को लक्ष्मण को चेताया।
स्वर्ण मृग ने राम को बहुत छकाया,
व्याकुल सिया ने राम रक्षा को लक्ष्मण पठाया।
सीता हरण को रावण ने रची सारी माया,
लक्ष्मण रेखा पार कराने साधु रूप बनाया।
सिय चीत्कार सुन जटायु बौखलाया,
सिय रक्षा हेतू रावण से युद्ध में जान गंवाया।
व्याकुल राम को सुग्रीव ने समझाया,
हनुमान ने सिय को राम मुद्रिका पहुंचाया।
वानरों संग राम ने सीता को छुड़वाया ,
रावण वध कर रावण को मोक्ष दिलाया।
राम सीता मिलन को अयोध्या ने दिपावली पर्व मनाया,
अमावस्या के अंधेरे को दियों की रौशनी से भगाया।
बिछड़े परिवार में खुशियाँ अपार लाया,
धन-धान्य सुख-समृधी शिव आशीर्वाद पाया।

19-10-2017, **दिवाली विशेष**

गोरख बानी

नववर्ष का संकल्प

न ही मंदिर में, न ही मस्जिद में
भगवान तो है भक्त की जिद में।
न ही गुरूद्वारे, न ही कोई गिरिजाघर,
प्रकृति में ही रचा-बसा है ईश्वर।
सच्ची लग्न और निःस्वार्थ कर्म,
यही है भक्त का सच्चा धर्म।
गीता, कुरान, बाइबिल और गुरूग्रन्थ,
ईश्वर है एक, कहते सभी साधु-सन्त।
राम रहीम हो या सिख इसाई,
है सभी की एक ही धरती माई।
सूरज ही है हर जीव का पिता,
ऊर्जा से सींच धरती को बनाया अन्नदाता।
माया में भटक इंसान हो गया हैवान,
प्रकृति और धरती का कर रहा नुकसान।
समय से अगर इंसान को न हुआ भान,
मिट जाएगा समय से पहले नामोनिशान।
ईश्वर की भक्ति ही करती हमें सावधान,
अंह को त्याग कर भक्त होता महान।
प्रेम रूपी ज्ञान के अस्त्र से हो सुसज्जित,
ताकी मानवता को न होना पड़े लज्जित।
हर नव वर्ष का हो यह संकल्प हमारा,
प्रकृति रक्षा कर धरती माँ का हम बने सहारा।
अध्यात्म और विज्ञान का हो संतुलन,
नवसंकल्प से नव वर्ष में सभी को मेरा नमन्।

27-12-2017

जलदान

गोरख बानी

धरा पर धारण कर जल,
जीवन को सिंचित करती हरपल।
सौर ऊर्जा से संचालित जल चक्र,
आधुनिकता की आँधी कर रही कुचक्र ।
कल को नहीं रहा अगर शुद्ध जल,
चहुंओर सिर्फ फैलेगा जल में मल।
ज्ञान, प्रयास और विश्वास के बल,
मानव को बचाना होगा धरा का कल।
उठो, जागो, देखो, त्याग कर अभिमान,
रोके हम धरा पर आने वाला तुफान।
बाल गोपाल, धरा की सब संतान,
मन वचन, कर्म कठोर संकल्प कर जलदान।

24-01-2018, **जलदान**

होली हर साल है

रंग, पिचकारी और गुलाल है,
होली में दिल मालामाल है।
पर मन में बहुत मलाल है,
उठती चाहतों का बुरा हाल है।
सामने गोरी का गाल है,
चेहरा गुलाबी, होंठ लाल है।

भीगा बदन बेमिसाल है,
नाजुक अदा मस्त चाल है।
गजब की शोखियां लहराता बाल है,
मीठी बोली चहकती सुरताल है।
अकेले में ये कैसा ख्याल है,
शायद भांग का ये कमाल है।
गुझिया नमकीन सजी थाल है,
बाल गोपाल का कोलाहाल है।
हर मजहब में बोलचाल है,
ऐसी होली हर साल है।
दुश्मनो की चाल है,
षडयंत्रों का जाल है।
हर तरफ मिलावट का माल है,
देश के लिए गंभीर सवाल है।
फिरकापरस्तियों की चाल-ढाल है।
न चेतना फिर बहुत बुरा काल है,
उठो जागो हर तरफ बवाल है,
रंगबिरंगी होली हर साल है।

24-02-2018

ज़िंदगी ही तो मोहब्बत है

ज़िंदगी ही तो मोहब्बत है,
मोहब्बत है तो ग़म है।
ग़म है तो सोहबत है,
सोहबत है तो हम है।

हम है तो महफिल जवां है,
जवां है तो आसां हर मुश्किल है।
मुश्किल है तो हर मर्ज़ की दवा है,
दवा है तो ताकत ही मंज़िल है।

मंज़िल है तो फिर क्या ग़म है,
ग़म नहीं है तो फिर यार है।
यार है तो मोहब्बत ही मोहब्बत है,
मोहब्बत है तो ज़िंदगी में बहार है।

03-07-2018

तलाश

रहबर की तलाश में,
हर राह से गुज़रा।
कांटे ही मिले राह में,
फिर भी मैं नहीं सुधरा।

जिद्द है ढूंढ निकालुँगा तुम्हें,
छिपे हो चाहे किसी भी राह में।
चाहे लगे मुझे कितने ही लम्हें,
कांटे ही रास्ता देंगे तुम्हारी चाह में।

जिंदगी का मकसद ही है तेरी तलाश,
वर्ना वजूद है ये मिट्टी और राख।
हर ऋण चुकाने से ही मिलेगा प्रकाश,
बोझ कर देगा जिंदगी में सुराख।

28-07-2018

गोरख बानी

आजादी के मायने

1857 को विद्रोह का बिगुल बजा,
छेड़ दी राग आजादी के परवानों ने।
95 वर्ष की काटी सजा,
भारत के मूल निवासियों* ने।

15 अगस्त 1947 को आजाद,
सत्ता थामी अंग्रेजों के गुलामों ने।
71 वर्ष से हो रहे आबाद,
धुल चाटी है मूल निवासियों* ने।

जाती, धर्म और भ्रष्टाचार की होड़,
जम कर हवा दी राजनीतिज्ञों ने।
जीवन के मूल उद्देश्य छोड़,
भटका दिया विदेशी बाजारों ने।

अब न चेते तो होगी तबाही,
न देंगे विदेशियों को रंग जमाने।
कर संकल्प काम करने को सही,
हम समझेंगे आजादी के सही मायने।

*(31 अगस्त 1952 को Criminal Tribes Act 1924 repeal होकर Denotified Tribes बने, जय हिंद, जय भारत)

15-08-2018

रक्षाबंधन

विष्णु ने दिया साची को सूत का धागा,
साची ने उसे इन्द्र की कलाई में बाँधा।
राखी के बल इन्द्र से बाली भागा,
रक्षाबन्धन ने दूर की अमरावती की बाधा।

विष्णु ने मांगा बाली से तीनों लोक,
बाली ने विष्णु से ली साथ रहने की प्रतिज्ञा।
लक्ष्मी को न भाया पाताल लोक,
राखी बाँध भाई बाली से मांगी विष्णु जाने की आज्ञा।

शुभ, लाभ की न थी कोई बहनी,
तब गणेश जी को नारद ने समझाया।
प्रकट भई रिद्धि, सिद्धी से दिव्य अग्नि,
गणेश पुत्री संतोषी माँ से राखी बंधवाया।

हुई शुरू तब से यह प्रथा रक्षाबन्धन,
सावन की पूर्णिमा का यह त्यौहार।
इंतजार करती बेसब्री से भारत की हर बहन,
राखी बाँध भाई की कलाई मिले खुब उपहार ।

26-08-2018

गोरख बानी

माँ काली माताणी

जग जननी, शिव अर्धांगिणी,
नर मुण्ड कपाल धारिणी,
दारूक, चण्ड-मुण्ड विनाशिणी
रक्तबीज रक्त भक्षिणी,
दुःख, शोक, भय हारिणी,
भक्त कष्ट निवारिणी,
काल चक्र निर्धारिणी,
तंत्र-मंत्र, सिद्धि उपासिणी,
जय माँ काली, जय कल्याणी,
ऊँ सिद्ध नमः काली माताणी।

29-11-2018

नववर्ष 2019

सितारों की भाषा, है ईश्वर की आशा
अहं की परिभाषा, है ईश्वर की निराशा
संतो की अभिलाषा, ज्ञान का हो खुलासा
खुदा ने है तराशा, सिर्फ प्यार को है परोसा
नववर्ष खुशियों की वर्षा, खुद पे हो भरोसा

01-01-2019

गोरख बानी

कोरोना को दारू मारी, भारतीय नारी सब पर भारी

दारू उर्फ़ शराब मतलब शनिदेव
और शनि सबपे भारी,
किसी से भी नहीं यारी,
अर्थात दण्डाधिकारी
सिर्फ भैरव हैं अधिकारी
कुकुर है जिनकी सवारी
जिनको है अपनी जान प्यारी
बिस्कुट खिलाएं कुकुर को ढेर सारी
कुकुर भगाए ये महामारी
वेद को समझने की है बारी
ज्ञान बाँटने से नहीं होती चोरी
क्योंकि चोर करते सीनाजोरी
चोर मचाए शोर, है उनकी कमजोरी
ध्यान से ही होती चेतना पूरी
गुरु के ध्यान से खत्म हो दूरी
अगर साधना हो अधुरी
इसमे हमारी मजबूरी
मार्ग भटकते वासना के पुजारी
दृढ़ इच्छाशक्ति हमारी
किस्मत से मिलती ऐसी नारी
जो करती बातें प्यारी
फिर करते फरारी की सवारी
नहीं होने देती सर भारी
थकें तो फिर सुनाती लोरी
राह भटके तो दे गारी
दिन रात एक ही पारी
बच्चों की ही चिन्ता सारी
घरबार की सारी जिम्मेदारी
नाम है उसका भारतीय नारी

देव, दानव, भगवान भी हैं आभारी

05-03-2020

गोरख बानी

"करोना" मेरा भारत महान,
आने वाली सदी की पहचान
खाना पकाने से पहले ही सावधान,
नहीं तो उठाना पड़ जाएगा भारी नुकसान,
हर माल जो मिलता किसी दुकान,
पता नहीं देती ऐसा माल के किसान,
सजग जो प्रहरी वही है पहलवान,
कर नहीं सकती सरकार हर फरमान,
सीमा ही नहीं खेत भी हैं आज विरान,
तभी प्रकृति ने कर दिया सबको हैरान,
वासना नहीं करती किसी की पहचान,
क्यों नहीं हर गलती से सीखता इंसान,
अगर संभालनी है विश्व की कमान,
स्मरण हो सबको ईश्वर का वरदान,
"करोना" कभी भी किसी जीव का अपमान,
क्योंकि "अंधभक्ती" है गलत अभिमान,
बहकावे में आ जाते हैं सभी नवजवान,
छलक ही जाता है अधूरा ज्ञान,
ईश्वर की भक्ति ही है सबसे महान,
वेद करती हर महामारी का पूर्ण निदान,
वैदिक ज्ञान पाने को करें सिद्ध गुरू का ध्यान,
सिद्ध बाबा गोरक्षनाथ करें मुश्किल आसान,
मिटा देंगे महामारी का नामो-निशान,
तभी भारत होगा विश्व का प्रधान,
अब न चुकेगा पृथ्वीराज चौहान,
नवरात्रि में सभी करें यह व्रत उठान,
जय जवान जय किसान जय विज्ञान,
जय जय जय मेरा भारत महान।

24-03-2020

अपने और सपने

गोरख बानी

मुझे तो अपनों ने ही खुब लूटा,
सभी विदेशियों का तो मैं प्यारा था,
मैं तो गंगा की गोद में भी नहीं डूबा,
जहाँ पानी भी बहुत ही गहरा था।

दर्द का तो पता ही नहीं चला,
माँ के प्यार की कश्ती का सहारा था,
हर गम को धुएं में उड़ाता गया,
बाबा गोरक्षनाथ का जो दूलारा था।

जिंदगी के हर मोड़ पे बस मुड़ता गया,
माँ काली की आँखों का जो इशारा था,
सपनों को देख बस उसको फैलाता गया,
बाबा भोलेनाथ ने जो मुझे हर पल संभाला था।

तारीख़: २१-०४-२०२०
क्षण: ०८: २२
स्थान: वाराणसी-०५

- डॉ मनीष कुमार
सहायक आचार्य
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
भा॰ प्रौ॰ सं॰ (का॰ हि॰ वि॰ वि॰)

आशिक़ी

गर सुने दिल की फिंजा, हो उससे सुकुं और मजा
मंज़ूर कुदरत की हर सज़ा, हर मुहब्बत को खुदा की रजा
आशिक़ी हुनर का ऊंचा दर्जा, आशिक़ का सबसे मजबूत कलेजा
सुन और समझ ले हर जानेजां, दीवाना नहीं दीवानों का भेजा
रूह में ही सबके अल्लाह सजा, इसलिए करते हैं तेरी पूजा
उसकी मर्जी से उठता जनाजा, चाहे तो सारी कायनात ठहर जा
ठोकर खा कर संभल जा, वक़्त रहते प्रजा की आंखों में उतर जा
बेशर्मी दिखावे का कर्जा , जिस्म ही नहीं रूह को भी देगी सज़ा

स्थान: वाराणसी
तिथि: ०६-०५-२०२०
छण: ०१:२२

- डॉ मनीष कुमार
सहायक आचार्य
विद्युत आभियांत्रिकी विभाग
भा॰प्रौ॰सं॰(का॰हि॰वि॰वि॰)

गोरख बानी

भूख की रक्षा है रक्षाबंधन
भाई को बरदास्त नहीं बहन का क्रंदन
बहन करती भाई से वंदन
रक्षा की भूख बनी रक्षाबंधन
विष्णु ने साची का कर अभिनंदन
दिया वरदान में सूत का एक बंधन
साची इन्द्र का किया सूत करबंधन
इन्द्र अमरावती से किया दैत्य निकंदन
भूख है सारी माया का बंधन
भूख ही कराती सारी अनबन
भूख के लिए है सारे प्रबंधन
भूख की रक्षा कराती रक्षाबंधन

भूखे पेट न भजन होई गोपाला
हर जीव को लीलती भूख की हाला
जपत रहो चाहे कितनी ही माला
भूख से ही पड़ता सबका पाला

रक्षा करती अन्न का निवाला
किसान ही अन्न के बीज डाला
मेहनत कर खेतों में अन्न पाला
भूख का रक्षक वही है रखवाला

वासना की भूख पैदा करती ज्वाला
अगर हमनें प्रकृति को नहीं संभाला
चित्कार करेगी हर मधुबाला
अब तो गोविंदा आला रे आला

खत्म कर दे ये वासना के बंधन
जगा के तु अलख निरंजन
पैदा कर दे अपना ऐसा स्पंदन
हर बहन करे भाई का रक्षाबंधन

हर जीव करे जीव से प्यार
खुशियों से परिपूर्ण हो त्यौहार
हर बहन को बेसब्री से इंतजार
भाई से मिले ढेरों मनचाहा उपहार

तिथि: ०३-०८-२०२० - डॉ मनीष कुमार
क्षण: १२:५१ सहायक आचार्य

भटकन

बिना भटके मंजिल नहीं मिलती
साहिल के बिना बेमतलब की कश्ती
डूबे या विरान रहे किसी वजूद की नहीं रहती
सोचे या न सोचे जिंदगी किसी काम की नहीं रहती

तुफान आए या बहार किस चीज की मस्ती
जाल में फंस कर भी इंद्रजाल में भी नहीं फंसती
बिना मोहब्बत के मौत भी नहीं मिलती
मुफ्त के सामान की कभी कोई कीमत नहीं होती

पैगाम देने से भी कोई महबूबा नहीं पटती
दर्द के बिना कोई दूआ या दवा भी नहीं मिलती
हमदर्द बनकर सच्ची मोहब्बत भी नहीं करती दोस्ती
तू ही बता मेरे परवर दिगार मेरे गुनाहों की सजा क्यों नहीं मिलती

मेरी ख्वाहिशें मायावी बनकर क्यों है ठगती
हर क्षण तो सांसे छोड़कर क्यों मौत नहीं मिलती
जिंदा रखकर कौन से गुनाहों की सजा मिलती
हमारी ख्वाहिशें तो नहीं जो तुझे मंजूर नहीं होती

तू ही बता तेरी ख्वाहिशें की अगर इज्जत होती
तो फिर मेरी जिंदगी मेरी क्यों नहीं रहती
फिर फैसला कर मौत तो मुझ पर मर मिटती
मेरी महबूबा अगर मौत नहीं तो भटकन ही है मेरी कश्ती

ऊँ सिद्ध गोरक्षनाथाए नमः, ऊँ सिद्धेश्वराए नमः, ऊँ सिद्धेश्वरी माताए नमः

दिनांक; १७-०२-२०२१ - डाॅ मनीष कुमार
छण: ०९:२३ सहायक प्राचार्य

चरित्रहीन पानी

गोरख बानी

इश्क नहीं है उतना रंगीन, जितना उसका जुर्म है संगीन
मिल जाए अगर ऐसी कोई रानी, चरित्र भी तरसे होने को चरित्रहीन पानी
गम न कर ऐ "मनीष" ये है गोरखबानी, गुरू ही देगा तेरे चरित्र को पानी
बुझाकर तेरी सारी प्यास बसेगा तेरे अंतर्मन में ही सदा अंतर्ध्यानी
शरीर नहीं ये है कुंभ में बसे चंद्र मन की कहानी, सुख-दुःख है भ्रम की निशानी
अंतर ज्वाला को शान्त करती चरित्रहीन पानी, भटकन नहीं होने देगी व्यर्थ कुर्बानी
गुरू ही ढूंढ़ता तेरे मन की रानी, जब हो गुरू का साथ उसका नहीं कोई सानी
जगत को देगा तु "मनीष" अपने गुरू की सच्ची निशानी एक चरित्रहीन पानी
तेरे सपने अब तेरे नहीं गुरू की है परेशानी, करले अपने मन की करके जी भर नादानी
तुझसे मिलकर ही तो गुरू की शुरू हुई कहानी, क्योंकि जिद्द है तेरी पानी बने चरित्रहीन पानी
रंग और गंध ने नष्ट की है जिन्दगानी, तन ही नहीं मन को भी दूषित करता रंगीन पानी
नासमझों को तो समझ ही नहीं आता चरित्रहीन पानी, तन-मन तृप्त कर अमर करती प्रेम निशानी
करता चल जितना तुने गुरू से है जानी, ताल-पोखरे तरसते कैसे बनूँ चरित्रहीन पानी
नदियाँ दूषित सागर बोले नष्ट हो रही जवानी, सूरज की ताप से ही मिलन कर होती चरित्रहीन पानी
बुझा कर दोनों की प्यास झमाझम बरसता पानी, गुरू का मान कर "मनीष" खत्म न हो ये कहानी
चरित्रहीन पानी ही देती धरा को नयी जवानी, छन- छन बजती चंचल नदियाँ होती नहीं पुरानी
गुरू-चेले की है यही अमर प्रेम कहानी, चरित्रहीन पानी ही बरसाती अमृत "गोरखबानी"

अथ श्री चरित्रहीन पानी कथा, ऊँ सिद्ध गोरक्षनाथाए नमः
ऊँ सिद्धेश्वराए नमः, ऊँ सिद्धेश्वरी माताए नमः
🧎IN🌍🌎🌏😇😜😆□□😍😚□

दिनांक: १९-०२-२०२१ डॉ मनीष कुमार

घुटन

गोरख बानी

बंद कमरों से आवाजें नहीं आती, शोर भी "घुटन" से तड़पती
महबूबा मेरी मौत दर्शन को तरसती, कैसे बंद दिवारों में "मनीष" की मस्ती
रहस्य मस्ती की "गुरू" की नहीं सस्ती, अंतर्ध्यानी गुरू ने दी अंतर्मन को भटकन की कश्ती
नासमझों की बेचैनी मनीष मन मयूर मंद-मंद मुस्काती, घुटन में मनीष की कैसे बढ़ाती हस्ती
माया के जाल में "मोहिनी" की माया हसीन दिखती, गुरूकृपा "मनीष" को माया से परे रखती
अमृत की बूंदे देव-दानव को लड़ाती, नीलकण्ठ की प्यास तो जग के जहर बुझाती
रक्तबीज के रक्त को चखने महाकाली ने ली उत्पति, भस्मासुर को हरि माया ही भस्म बनाती
हिरण्याकश्यप वध को खंभ नरसिंह को द्वार देती, अवतरित करती हरि को प्रह्लाद की भक्ति
हरिभक्त ध्रुव निरंतर हरिद्वार दिखाती, इसीलिए गंगा काशी में दक्षिण से उत्तर बहती
गंगाधर की जटा मे घुटन गंगा की देती मुक्ति, भागीरथी प्रयास से जाना घुटन से मोक्ष की मस्ती
सरस्वती वीणा से जब चंद्रमा की हो संगती, सुर-संगीत की निरंतर सरिता बहती
घुटन ही विलुप्त सरस्वती का बोध कराती, कुंभ में चंद्र की घुटन सूर्य के ताप से मोक्ष दिलाती
घुटन ही गुरू-चेले मनीष का मिलाती , गोरखबानी मुफ्त होकर ही मुफ्त से भी बहुत कीमती

अथ श्रीहरि घुटन रहस्य कथा, ऊँ सिद्ध गोरक्षनाथाए नमः
ऊँ सिद्धेश्वराए नमः, ऊँ सिद्धेश्वरी माताए नमः
🙏IN🌍🌎🌏😇😛😆□□😍😚□

दिनांक: २२-०२- २०२१ **डॉ मनीष कुमार**

<u>सीताराम पुनर्मिलन</u>

गोरख बानी

बसन्त बीते, होली बीती, आने को तत्पर गरमी ।
दिन चढ़ते, रात रोती, तापमान की खत्म होती नरमी।।

धरा सिसकती, बलात्कार करते सत्ता लोलुप विधर्मी।
माँ बिलखती, देख भस्मासुर की जग जाहिर बेशर्मी।।

मौसम की प्रकृति, जवानी पर नहीं कोई पाबंदी।
पाबंदी करवाती, घमंडी नादानी से भी बात गंदी।।

छप्पन इंच छाती, बातों से कभी न कम होती मंदी।
पके फलों से बोझिल धरती, महादेव निहारते संग नंदी।।

झूठ में फंसाती, आज नशे में चूर हर बंदा और बंदी।
गर्मी उतरती, जब सावन में बरसे झमाझम बूंदाबांदी।।

शीतलहर मचलती, घमंडी दशानन की कर हर बरबादी।
अमावस इतराती, सीताराम पुनर्मिलन हो १४ वर्षों उपरांत शादी।।

दिनांक: ३०-०३-२०२१
छण: ०४:०७, मंगलवार
स्थान: गोरक्षनाथ धाम, सुसुवाही
वाराणसी, उत्तर प्रदेश,

डॉ मनीष कुमार
सहायक प्राचार्य
विद्युत अभियांत्रिक विभाग
भा॰प्रौ॰सं॰ (का॰ हि॰ वि॰ वि॰)
Pin code: 221005, INDIA

🙈😇❤💖

मनीष प्रेरणा

गोरखबाबा कहीन, जौन कंही वही करना

गोरख बानी

तेरे लिए ही दीक्षांत कर मुझे ही है ढूंढ़ना
जैसी करनी, उसको वैसे(कैसे) ही(भी) भरना
जग की जो है करूणा, वैसी हो "मनीष प्रेरणा"
गुरू को समर्पित होकर दौड़ना
अब आँखें देखकर नहीं मोड़ना
धरती के हर रस चखना, चख कर सबको चखाना
मौज धरती की स्वर्ग तक पहुंचाना
मोक्ष देगी महादेव संग पार्वती की रचना
गंगा को ब्रह्मपुत्र से मिलाना
घटा घनघोर मयूर संग इंद्र-इंद्राणी नचाना
अमृत रूपी चरित्रहीन पानी बरसाना
शीतल शाँत सी बनकर मनीष की प्रेरणा

दिनांक: २३-०५-२०२१ डाॅ मनीष कुमार
छण: ०२:३१, रविवार

सावन

सावन की बूंदे तन मन की बुझाकर प्यास
धरा जीव में सिंचित करती महादेव की आस
पार्वती की तपस्या से द्रवित भोले को आई सांस
प्रिय सखा विष्णु का शिव-पार्वती मिलन प्रयास

गोरख बानी

नाग किन्नर गण देव दानव का एकजुट वास
देवराज इंद्र घनघोर घटा बरसा कर बने खास
साधू सन्त गुरू ऋषि नर नारी कर सोमवार उपवास
नाचे मन मयूर गंगा इठलाती खत्म हुआ वनवास

तीज-त्यौहार महादेव का दर्शन देती माँ को मिठास
आशीर्वाद माँगती महादेव कभी न हो उदास
हरियाली नंदी किसान हमेशा हो आसपास
ताल तलैया पोखरे तालाब नदी नाले की बुझी प्यास

धर्म वेद विज्ञान तकनीक मानव समाज का अनूठा साथ
आओ चलो मिलकर सब एकदूसरे का बटाएं हाथ
नवजीवन की हो शुरुआत सावन का यही स्वार्थ
भोले शिव पार्वती हैं भूतप्रेत और अनाथों के नाथ

धर्मयुद्ध की रणभेरी से जब होकर विचलित पार्थ
कृष्ण ने संभाला अर्जुन को दिव्य दर्शन गीता के साथ
जगत का हो कल्याण यही है गुरू का परमार्थ
लीलाओं के लीलाधर जब हों बाबा गोरक्षनाथ

ॐ सिद्ध गोरक्षनाथाए नमः, ॐ सिद्धेश्वराए नमः, ॐ सिद्धेश्वरी माताए नमः

दिनांक: १२-०८-२०२१, डॉ मनीष कुमार

छण: १२:५९

गोरख बानी

चंचल चांदनी नचाती तारे-सारे

दिनांक:१८-११-२०२१, छण: ००:३३, स्थल: अस्सी घाट काशी, डाॅ मनीष कुमार

बसे दिल में धीरे-धीरे,
चंचल चांदनी गंग के तीरे-तीरे,
रूप रंग मोहे मोहनी मोरे-मोरे,
धड़कन धड़के नाचे छोरे-छोरे

मन मयूर बन मोरनी आँख मारे
रास रचाने राधा संग कन्हैया पधारे
कान्हा अठखेलियों से गोपियां हारे
चंचल चांदनी नचाती तारे-सारे

व्याकुल हृदय को मिले सहारे,
गणपति दर्शन जब हुए हमारे,
दिल मालामाल जब दिल हारे
अब महादेव पार्वती नंदी हमारे

गंगा जमुना सरस्वती गोद तुम्हारे
ठहर गई मन की गति दर्द सम्हारे
काशी की धरती पावन भाग्य हमारे
चंचल चांदनी नचाती तारे- सारे

मन की व्यथा जीव की कथा सुधरे
शीतल चांदनी गंगा धोती तन-मन हमरे,
सुर-संगीत भजन-कीर्तन मन को फेरे,
बुझी प्यास नई तकनीक से चमके अंधेरे

उम्मीद जगी होगी ताजगी सबेरे-सबेरे
चहके पक्षी जहर खत्म कर पेड़ हमारे
जवान किसान मेहनत से भूख तारे
चंचल चांदनी नचाती तारे-सारे

कामना: डॉ मनीष कुमार की गोरखबानीगोरखबानी दिनांक:१८-११-२०२१, छण: ००:३३, स्थल: अस्सी घाट काशी, डाॅ मनीष कुमार

गोरख बानी

महादेव की मस्ती

दिनांक: १०-१२-२०२१, क्षण: २२:२३, स्थान: गोरक्षनाथ धाम काशी

महादेव की मस्ती, है नहीं सस्ती
चाहत की चाहत, है आफत को दावत
भांग धतूरा का घात, देता महादेव को राहत
नंदी गण प्रेत देवता, मोक्षदायनी काशी में बसता

सुख की वहीं सांस, जहाँ भी हो महादेव का वास
किले महल सोने की भव्यता, महादेव मन नहीं रमता
बेलपत्र मदार की माला, मृगचर्म धारित कण्ठ नाग हाला
त्रिशूल पर ब्रह्मांड बसा, डमरू की थाप पर नटराज हंसा

जगन्नाथ जग जननी संग कर क्रीड़ा, हरता हर जग की पीड़ा
मंगल का बल गणेश चतुरता, सरस्वती वीणा से सुर-संगीत बहता
गंगाधर जटा से गंगा बहती, भागीरथ धरती पर गंगा इठलाती
काशी करवट ले दक्षिण से उत्तर, गंगा होती काशी के भीतर

घाट से घाट होती, गंगा काशी में नहीं घटती
महादेव के चरण पखार, गंगासागर तक है विस्तार
अन्नपूर्णा संग निवास, महादेव का खास कैलाश
गुरु का दास मनीष कुमार, गोरक्षनाथ की महिमा अपार

गोरख बानी

कातिल

डॉ मनीष कुमार, सहायक प्राचार्य, विद्युत अभियांत्रिक विभाग, भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान(काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), वाराणसी-२२१००५, उत्तर प्रदेश, भारत

जीवन की दुश्वारियों से बोझिल, जीने का एक ही तरीका है हासिल
दुश्मनों की हसीन क्षणों की साहिल, नज़रों से ही कत्ल करदे कातिल
बाकी न रही अब कोई ख्वाहिशें, मीठी नज़र हसीन अदा में ऐसे फंसे
होश में ही बेहोश होकर खुब हंसे, गला काटने वाली जब दे रही हो सांसे
समय चक्र रचता ऐसा चक्रव्यूह, समझदार हो या नासमझों का समूह
छः द्वार पार सातवां द्वार भेदना दुरूह, करती इंतजार कातिल की रूह
कातिल की माया है बेगुनाह, बच न सकता कोई जहांपनाह
फिर क्यों भटकता है यहां-वहां, कत्ल हो जाने दे कातिल रहता जहां
हम मारे गए मोहब्बत के जाल से, भेद न सका जब कोई भाल से
लुटते रहे हम तो सालों साल से, काम करते रहे कातिल के ख्याल से
फिर भी पसंद नहीं कातिल को मेरा काम, चाहे कितने भी कृष्ण बनाओ या राम
कातिल नफरत ने कर दिया जीना हराम, ज़िद्दी है कातिल पर तुझे मेरा सलाम
कातिल की पहचान से हो गया कत्ल, क्योंकि पत्थर नहीं नज़रों से हुई मंद अक्ल
आईना भी नहीं पहचानता मेरी शक्ल, क्योंकि नज़रें तो ढूंढ़ती कातिल हर पल
खेल खेला महादेव ने है अजब, भोले बनकर बैठे रहते हैं गजब
भांग धतुरे बेलपत्र दुध मदार चढ़े जब, थमा देते गुरू को "मनीष" का सब
न रहेगा बांस न बजेगी बाँसुरी, ऐसे ही कत्ल करती कातिल आसुरी
कत्ल करने के बाद भी नहीं होती सुरसुरी, प्रश्न करता पहली पंसद है या दूसरी
जवाब नहीं दे सकता ऐसा कोई, अब कातिल की नज़रों में शंका समाई
जहर से जहरीली बनाती सौतेली माई, गुरु का खेल देख कातिल भी रोई

दिनांक: १६-०४-२०२२, छण: १२:२०, दिन: शनिवार, स्थान: गोरक्षनाथ धाम

गोरख बानी

नफरत

जीवन की दुश्वारियों से बोझिल, जीने का एक ही तरीका है हासिल
दुश्मनों की हसीन क्षणों की साहिल, नज़रों से ही कत्ल करदे नफरत
बाकी न रही अब कोई ख्वाहिशें, मीठी नज़र हसीन अदा में ऐसे फंसे
होश में ही बेहोश होकर खुब हंसे, गला काटने वाली जब दे रही हो सांसे
समय चक्र रचता ऐसा चक्रव्यूह, समझदार हो या नासमझों का समूह
छः द्वार पार सातवां द्वार भेदना दुरूह, करती इंतजार नफरत की रूह
नफरत की माया है बेगुनाह, बच न सकता कोई जहांपनाह
फिर क्यों भटकता है यहां-वहां, नफरत हो जाने दे नफरत रहती जहां
हम मारे गए मोहब्बत के जाल से, भेद न सका जब कोई भाल से
लुटते रहे हम तो सालों साल से, काम करते रहे नफरत के ख्याल से
फिर भी पसंद नहीं नफरत को मेरा काम, चाहे कितने भी कृष्ण बनाओ या राम
नफरत नफरत ने कर दिया जीना हराम, जिद्दी है नफरत पर तुझे मेरा सलाम
नफरत की पहचान से हो गया नफरत, क्योंकि पत्थर नहीं नज़रों से हुई मंद अक्ल
आईना भी नहीं पहचानता मेरी शक्ल, क्योंकि नज़रें तो ढूंढती नफरत हर पल
खेल खेला महादेव ने है अजब, भोले बनकर बैठे रहते हैं गजब
भांग धतुरे बेलपत्र दुध मदार चढ़े जब, थमा देते गुरू को "मनीष" का सब
न रहेगा बांस न बजेगी बाँसुरी, ऐसे ही नफरत करती नफरत आसुरी
नफरत करने के बाद भी नहीं होती सुरसुरी, प्रश्न करता पहली पंसद है या दूसरी
जवाब नहीं दे सकता ऐसा कोई, अब नफरत की नज़रों में शंका समाई
जहर से जहरीली बनाती नफरत(सौतेली) माई, गुरू का खेल देख नफरत भी रोई

दिनांक: १६-०४-२०२२, छण: २१:२१, दिन: शनिवार, स्थान: अस्सी घाट

वफा-बेवफा

वक्त से करने वाले वफा,
कभी होते नहीं बेवफा
वक्त रहते अगर हो हर ऋण सफा
जिंदगी की हर गलती हो जाती मफा
बीती जिंदगी का एक ही फलसफा
वक्त रहते खफा से हो खफा
आने वाली जिंदगी से कष्ट रफा-दफा
बेवफा भी मजबूर होकर करे वफा

वफा-बेवफा होती लहरों समान
उतार-चढ़ाव करती चंद्र सम्मान
सूर्य की आकर्षक तरंगे
बढ़ाती चंद्र मन की उमंगे
चौदह कलाओं से पूर्ण चांदनी
अमावस को करती मनमानी
आज न छोड़ेंगे हम तेरी चोली
भरती नहीं जबतक मेरी झोली

दिनांक: १८-०५-२०२२
छण: २२:५९, बुद्धवार
स्थान: गोरक्षनाथ धाम, सुसुवाही
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

डॉ मनीष कुमार
सहायक प्राचार्य
विद्युत अभियांत्रिक विभाग
भा.प्रौ.सं.(का. हि. वि. वि.)
Pin code: 221005, INDIA IN 🙏😊🖤💝

गोरख बानी

परदेसी

हजारों ख्वाहिशों की बरसी, दूर चला मनाने को एक परदेसी
गिले शिकवों ने खोली, हर राज-रहस्यों की पहेली की होली
मन में नयी तरंग-उमंग, गंगा-जमुना-सरस्वती का जब मिला संग
कल-कल,छन-छन बहती, भरती हर सपनों में इंद्र धनुषी रंग

चारों दिशाएं का दर्शन कराती छठी इंद्री, बीस-बाईस वर्षं छोटी सुन्दरी
अठारह वर्षों की पहेली सुलझी, चौतरफा वार को झेलता माझी
पत्थर पहाड़ जैसी उजड़ी जिंदगी, से रास्ता बना परदेसी करे गुरु बंदगी
गम-खुशी की ऊंच-नीच, झेलता परदेसी अप्सराओं के बीच

दर्द के आंसू से भरे नयन, खुशी के आसुओं से गुरु को नमन
कनक -सनक की चमक-धमक, "मनीष"ने सीखा माया-साया के फर्क
कनक की मोहनी जाल-चाल, मातृभूमि की सेवा सनक करती बेहाल
घर-घर घुमने को परदेसी, घर-द्वार को करने देसी से बिदेसी

ॐ सिद्ध गोरक्षनाथाए नमः, ॐ सिद्धेश्वराए नमः, ॐ सिद्धेश्वरी माताए नमः

अथ श्री गोरखबानी, स्थान-गोरक्षनाथ धाम, काशी क्षेत्रे, जम्बूद्वीपे, दिनांक ०४-०६-२०२२, पल- १८:०४
द्वारा डा मनीष कुमार
03-08-2022, बुधवार, 20:12, गोरक्षनाथ धाम

कातिल का क़त्ल

सावन का महीना, चरित्रहीन पानी का छल
मनीष और गुरू का पसीना, कातिल का हो गया क़त्ल
छन्द - छन्द मुस्काती, चिड़ियों की चहचहाहट से गूंज धरती
महादेव की महामस्ती, भाँग धतूरा चढ़ा कातिल की हरी मति

नैनन में छायी खुमारी, दर्पण से दर्प हटा शुरुवात रण
मनीष की बीमारी, गुरू महादेव को सब अर्पण
चैन से कटती रातें हमारी, दिल में सुकून देख हरियाली हरछण
बंसी बजा सो रहा त्रिपुरारी, रूद्र को चिंता अब कण कण

मन के मीत से प्रीत, कातिल के इरादों का क़त्ल
पत्थर पत्थर के मनमीत, कातिल को नहीं सूझे कोई हल
साँसो में बसी घनघोर नफरत, गलत इरादों का क़त्ल
आखिरी दाँव भी गलत, कल हो न हो चिंता कातिल की हरपल

मन के हारे है, मन के जीते जीत रटती मंत्र
काया ही माया है, गुरू से रण करती मजबूत यन्त्र
धूप की छाया है, कातिल चला अब नयी रीत जब असफल तंत्र
परिवार को शामिल कर, महान होने को नया षड्यंत्र

गंगा जमुना सरस्वती के साथ, कौशल्या माता का हाथ
हृदय में बसें गोरक्षनाथ, रामबाबू का मिला प्यार निःस्वार्थ
अब नहीं मनीष अनाथ, जब साथ हों भूतों के भूतनाथ
कातिल को अब मिला साथ, सपने पूर्ण होने का स्वार्थ

गोरख बानी

अनन्त चतुर्दशी, ०९-०९-२०२२, शुक्रवार

नव-नव शुक्रवार बीसेबाईस, मन क भईल फरमाईस
बालगणेश चतुर्दशी अनंतईस, माँई का लाल जग हसाईस

विघ्न हरे बन गणपति, एकदंत लम्बोदर,
बुद्धि विवेक से सारी पीड़ा हर
करे सुंदर गणीत वार, अचूक मजेदार हर प्रहार, पर अत्यंत धारदार हरबार

जग जाहिर हो हर बुधवार, हर जीव पशु पक्षी में पनपे प्यार
प्रकृति को मिला अनमोल उपहार, विघ्न हरने आया दामोदर
दिल में सुकून, मन को चैन, शरीर को आराम
ध्यान केंद्रित कर संपूर्ण विश्व भर में बसाए मामा राम

मूूषक सवारी चक्र एक, अग्निवेश संतोषी शुभ लाभ की बहिन एक
रिद्धि सिद्धि और सिद्धिविनायक, जीवन चक्र में कर विविधता अनेक

उवाच: डॉक्टर मनीष कुमार की गोरखबानी

दर्द की दवा

हर दर्द की दवा मेरे करीब है, तू जो मिला बस मेरा नसीब है
धड़कन धड़कता अजीब है, खुशियां लुटाता मेरा हबीब है

कल तक अकेले, इतने बदनसीब थे,
चलते रहे पर, चाहे जितने फरेब थे
वक्त ने ली करवट, सपने कितने हसीन थे
हकीकत ही नहीं, सपने भी खुशनसीब थे

सपनों को हकीकत में उतारा, हुआ जब मैं परम आवारा
जिंदगी मिले न मिले दुबारा, अब गुरूर गुरू को भी प्यारा

चाहत का चाहत से मिलन, चेहरे से खत्म होती सिकन
सुनाई देती है अब धड़कन, जलन को भी होती जलन

दस का दम सितंबर का महीना, बीस बाईस की जब हो हसीना
नैनों से नैन मिले तो छूटे पसीना, कमबख्त दिल होता कमीना

कातिल को तलाश कैसे छूटा शिकार, उम्मीद जताई बहुत है दिल बेकरार
सारे ईशारे अब हुए बेकार, रति ने किया जब हंसते हुए इकरार

दशहरा

राम रावण का युद्ध, नहीं मानवता के विरुद्ध
है एक अनोखा संदेश विशुद्ध, करना है धरती को शुद्ध
सतयुग के परशुराम. त्रेतायुग के जननायक राम
अत्याचारी क्षत्रियों का काम तमाम, करते परशु से राम
ब्राह्मणों ने जब की नींद हराम, क्षत्र धारण करते राम
ब्रह्मा की माया से परेशान, माया का ही राम ने मिटाया नामोनिशान
पालक विष्णु का एक ही काम, धरती माता को देना आराम
जब-जब अत्याचारियों से धरती पटी,
सरस्वती सीता को समाने धरती फटी
सरस्वती ब्रह्मा से हैरान, सीता राम से परेशान
सती थी एकदम नादान, भस्म हुई जब शिव को न मान
भैरव का तब हुआ अहवान, दक्ष का कर खत्म अभिमान
भटकते शिव को मिला विष्णु का साथ,
जब बहन पार्वती ने थामा शिव का हाथ
ब्रह्मा से लेकर वरदान, रावण का वध करे इंसान
रावण को था विश्वास, शिव करेंगे सोने की लंका में वास
परन्तु ज्ञान से उत्पन्न अभिमान, रावण ने किया शिव अपमान
शिव का रूद्र रूप हनुमान, सोने की लंका को बनाया श्मशान
सीता का कर हरण, रावण ने लिया राम से रण
विभीषण आया राम की शरण, रावण को किया मृत्यु ने वरण
राम सीता का हुआ सवेरा, सबने मिलकर मनाया दशहरा

बुद्धकथा- डा मनीष कुमार की गोरखबानी
दिनांक: 05-10-2022, छण: 17:50, बुधवार,
जम्बूद्वीपे काशी सुसुवाही स्थिते गोरक्षनाथ धाम

गोरख बानी

फकीर

बंधना स्वीकार नहीं, मनीष चला बन फकीर
जहां सत्कार नहीं, उस राह बसे अंधे अमिर
वतन के लिए कदम सही, जिस पथ उड़े अबीर
सच्चा हमसफर वही, चले जो ताल से ताल मिलाकर

हर क्षण गुरू मार्गदर्शन, अग्निपथ को करे अमर
दीप धूप कर जल वर्षन, मन इष्टदेव का ध्यान कर
पूर्ण प्रकाशित अंतर्मन, महादेव से यही प्रार्थना कर
जलन से पीड़ित जलन, तलाशती हरदम सच्चा रहबर

काम क्रोध, मोहिनी दांव, छीनती मन के ठहराव
ताव से खाती ताव, बातों से ही कर देती बदलाव
कितना भी दूं भाव, दे दूं चाहे जितना सुझाव
बदलता नहीं स्वभाव, भटकन ही देती बहाव

३६ गुण, १६ श्रृंगार, सती स्त्री का सबसे बड़ा गहना
काम पूर्ण बिना अंगार, माता का यही बारम्बार कहना
सम्पूर्ण, गुरू अंगीकार, वेद पूराण ब्रह्मचर्यासन पढ़ना
चतुर्वर्ण, बिना विकार, गृहस्थ आश्रम में इंसान बनना

तीसरा चरण कर स्वीकार, वानप्रस्थ में दीक्षांत आखिर
मन से रण नहीं बेकार, संन्यास ग्रहण वासना को दे चीर
हर वर्ण करे पुकार, इंसाफ की इंसानियत ही सबसे वीर
समर्पण ही स्वीकार, न्याय करता हरएक मस्त फकीर

मनभाव:- डाॅ मनीष कुमार की गोरखबानी, छण:- ०१:४५, दिनांक:- २२-१०-२०२२

डर के आगे जीत है

डर के आगे जीत है, सदियों की ये रीत है
मन के मनमीत है, होती जब सच्ची प्रीत है
दिल के ये गीत है, उठती लहरों का संगीत है
गुनगुनी सी शीत है, चंचल मन बहुत पुनीत है

बेचैनी को भी अब चैन, हौले हौले धड़कती धड़कन
बसे जब अपने रैन, जागृत हो उठते सपनों से नयन
दस्तक देता देखो कौन, जब होता उम्मीदों का शयन
देखकर मन का मौन, हर ख्वाहिश पूर्ण करता भगवन

भक्ती से ही डर को मार, संभव नहीं अब कोई प्रहार
फिर होती उनकी हार, डराते लड़ाते जो करके संहार
करे चाहे जितने भी वार, प्यार से होता सब बेकार
सब बातों का एक सार, प्यार ही है अनमोल उपहार

हर डगर पर कर सफर, भटकन भी उस समय अमर
हिम्मत से ही डरती डर, बीतती सारी ज्यों ज्यों उमर
है ये सबको ये खबर, अब नहीं भटकन ईधर ऊधर
गुरू ही सबसे ऊपर, जीत है आगे मनीष छोड़ता डर

हार कर भी जीत है, जबतक जीवन में संगीत है
होती सबसे बड़ी प्रीत है, चैन से जीवन व्यतीत है
श्रम से होती बड़ी प्रतीत है, सिखाती हर नयी रीत है
ईष्टभक्ती ही अजीत है, क्योंकि डर के आगे जीत है

डर सफर:- डॉ मनीष कुमार की गोरखबानी
दिनांक: २८-१०-२०२२, छण:-२१:१५, स्थल:-लखनऊ-सुल्तानपुर-काशी मार्ग

गोरख बानी

छलिया

छलिया मेरा नाम, छू लेना मन का काम
छूकर मन राम, करता काम सारे तमाम
मन अगर न मान, बेड़ा पार करते हनुमान
लक्ष्मण के समान, करते हर पथ आसान

छलते छलाते छलिया, छल गुरू गोरख किया याद
फल मिले बढ़िया, बाबा गोरख से जब किया फरियाद
डुबाते शत्रु की नईया, हर क्षण षडयंत्र करते बरबाद
साथ है शनि अढ़िया, फैसला देव दिपावली के बाद

महाकाल की देख मस्ती, नशा जवानी का उतरती सुस्ती
बदन भईल कसरती, महाकाल चलाते एक हाथ से कश्ती
खुबसूरत है कुदरती, महाकाली की अदा की खुबसूरती
खिलखिलाती प्रकृति, अब इंसाफ की बढ़ेगी चढ़ेगी हस्ती

छल जब ढगे छलिया, संभाले हर क्षण गोरक्षनाथ
हर पासे को ढेर किया, भूत भवानी नाग स्वामी भूतनाथ
गंगा ने गोद लिया, मूषक संग महालक्ष्मी गणेश साथ साथ
बहुरूपियों की माया, सर्वनाश करती महामाया के बांए हाथ

अंत भला तो सब भला, यही प्रयास करता छलिया
बाल गोपाल और लल्ला, किलकारी देख प्रसन्न होती मईया
छलिया फेंक छल्ला, प्राकृतिक रंगो से हरित होती दुनिया
देख जिंदगी का मसाला, मोक्ष प्राप्त की ओर अग्रसर छलिया

छलिया छल:- डॉ मनीष कुमार की गोरखबानी
दिनांक: ३०-१०-२०२२, छण:१३:५५, रविवार, स्थल:गोरक्षनाथ धाम

संगीन जुर्म की कहानी

संगीन जुर्म की कहानी, सुनो सबजन मेरी गोरख जुबानी
शुन्य खत्म करने की ठानी, संगीन भी होता चरित्र हीन पानी
शुन्य का शोर मचाने संगीन होता कट्टर बेजुबानी
शुन्य में भरने को चरित्र हीन पानी, डंक मारती संगीन जवानी
शुन्य का जहर होता बेपानी, चरित्र हीन पानी ठंडी करती जहरीली गोरख बानी
मुझे तो अपनों ने लुटा, गैरों ने भी लूटा, मेरी कश्ती वहीं डूबी जहां से मैं टूटा
जितना मैं टूटा, उतना ही तगड़ा गड़ा खड़ा खूंटा
छलिया गुरू का सोंटा, छलिया ने जमकर बांटा
तब जाकर चंद्र यान ने लूटा, विश्व में प्रथम होने का मारा गोटा
तिरंगे का निशान, इसरो की पहचान, विक्रम हुआ जवान
बुद्ध का गोरख गान, विक्रम करेगा चंद्र दक्षिण ध्रुव की सतह पहचान
बुद्ध -चंद्र का हुआ मिलन, बुद्ध करेगा अब चंद्र की मुश्किल आसान
इंसानियत की नई परिभाषा, होगी अब हर जीव की नई अभिलाषा
अध्यात्म - विज्ञान के संतुलन, प्रकृति करेगी अब शिव का भरपूर आलिंगन
छलिया गुरू गोरख, महादेव काली की मुस्कान, मस्त हुए हर जीव, जवान और किसान
अभी तो यह प्रथम सीढ़ी है, नई तकनीक, इंसानियत से लबरेज करनी सारी पीढ़ी है
सत्य की गाथा, जीवन में उमंग भरती गोरख बानी
अब तो बढ़ेगी उम्र, जवान करती चरित्रहीन पानी

चंद्र विक्रम की गाथा:- डॉ मनीष कुमार की गोरख बानी
दिनांक: २४/०८/२०२३, गुरूवार, क्षण: ०४:२५

पागल शहज़ादी

एक शब्द में बयान नहीं कर पाती,

औकात पगले की तू बर्दाश्त नहीं कर सकती,

तेरी जैसी शहजादी किसी की नहीं,

खोज ऐसा शहजादे जो तेरी तरह पागल नहीं

पल में रंगत बदल जाती तेरी,

हवस की प्यासी पीछे पड़े मेरी,

डायन भी सात घर छोड़कर भागी,

शहजादी होकर मुझे देख क्यों आंख भीगी,

तुझे अपनी दौलते हुस्न का गुरूर,

मैं हूं मस्तमौला अपने सूरूर,

मन करता नहीं तेरी परछाई भी पड़े,

लेकिन तू पागल होकर हर क्षण पीछा न छोड़े,

ये सुनाने क्यों आईं हो और पागल तो हो गई हो अपनी औकात बता कर,

साथ जिसके खुदा हो वो रोता तेरी जैसी शहजादी बना कर

😝😝😝😝😝😝🤣🤣🤣🤣🤣

दिनांक: २२/०९/२०२३

गोरख बानी

मंगलवार १४ नवंबर २०२३ , बाल दिवस की फरमाइश

बुधवार १५ नवंबर २०२३, डॉ मनीष कुमार की पैदाइश

जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि,
संपत कितना भी हो सरल,
पी न सकता नीलकंठ का गरल(Girl□😆😆😝😝, मां काली),
स्त्री की रचना भगवान का नहीं काम,
भगवान ही है स्त्री माया का राम,
स्त्री की सरल संपत,
पुरुष का दिमाग है लंपट,
स्त्री है जगत जननी,
कविता से न कर कपट🤣🤣😆😝😌),
स्त्री से है भगवान,
पुरुष न कर उलट-पलट,
पुरुष के दिमाग का गरल,
है इतना न संपत सरल,
जहां न पहुंचे कवि,
वो है स्त्री की असली छवि
🙏😇😇♾🕉,
पुरुष को मिले हर पकवान,
इसलिए स्त्री की रूपी रचना है भगवान,
स्त्री को समझना नहीं आसान,
हंस लें चाहे जितना शैतान,
कहीं पे निगाहें चाहे सूपर
व्यंग करता भगवान पर,
पुरुष का सिर्फ एक निशाना,
दिमाग से स्त्री को रिझाना
(😝😝😝😆😆🤣🤣□□□),
त्रिया चरित्र की मूल मिस्त्री,
करती पुरुष दिमाग की स्त्री (iron, press),
घुम घुम के वही बहाना,
गदा गधा हो या जमाना,
कवि सम्मेलन में ही महफ़िल सजाना

ख़ुशी और ग़म

एक ही सिक्के के दो पहलू, ख़ुशी और ग़म

अपने पास हो तो सुखी दूसरे के पास हो तो यम

अजब है माया फिर भी इंसान होता है सम

चलती रहती है जिंदगी मस्त होते रहते हम

समय की चाल है समझ गये तो नहीं किसी से कम

कभी इस डाल तो कभी उस डाल चिड़िया फुदकती हरदम

देख भाई देख प्रकृति की लीला आंखें होती नम

माना जेब से फ़कीर है पर मस्त मन है मनोरम

क्या ले के आए थे क्या ले के जाएंगें एकदम

थक के यूं न बैठ बढ़ाता जा हर कदम

मंजिल मिले न मिले फिर से होगा जन्म

सबक जुड़ता रहता फिर चाहे हम रहे न रहे हम

पुरानी यादें ही देती रहती ख़ुशी और ग़म

फिर क्यों पालता रहता इंसान ये वहम

लड़ाई झगड़ा मुहब्बत का हर एक को अहम

ज्ञान अज्ञान में कोई फर्क नहीं फिर कैसी शर्म

ख़ुशी और ग़म उवाच - डॉ मनीष कुमार

तिथि:- २३/०४/२०२५

पल:- ०२:०५, वार:- बुधवार

गोरख बानी

दुख की पीड़ा

एक मादा और एक नर, खुदा के दो बेहतरीन उपहार
प्रकृति को मिला फिर भर दी जीवन में बहार
सूरज की गर्मी चांद की शीतलता में कितना प्यार
साल में बदलते मौसम हर दिन लगता त्योहार
है किसी की इतनी अनमोल रचना जो दे टक्कर
पड़ो न किसी फेर में खा जाओगे चक्कर
रहो प्रकृति के रंग में वरना पड़ जाओगे बिमार
सपने इतने हसीन कि टूटता नहीं खुमार
दुख भी है सुख की पहचान और अपना यार
चाहे कितने ही कांटे मिले चाहे पड़े मार
भले ही खुश के आंसू रुलाता पर रहता हरदम तैयार
सबक याद कराया, राह दिखाता यही जीवन का सार
सुख में भले न उठे वजन दुख ही उठाता सारा भार
चार दिन की चांदनी पर दुख को न मिले खुशियों का हार
ग़म का सारा बोझ उठाकर पर मिलता नहीं प्यार
जिसे देखो चाहे मादा चाहे नर दुख को धिक्कारे बार-बार

दुख की पीड़ा उवाच:- डॉ मनीष कुमार
तिथि:- ०७/०५/२०२५
पल:- ००:३६, वार:- बुधवार

गुरू

मन में कलेश हैं सब चतुर के चतुर

कस्तुरी कुण्डल बसे पर तांके दूर-दूर

भटके जंगल जंगल पाने को नूर

अधजल गगरी छलके यही है दस्तूर

ऐसे ना मुझे तुम देखो घूर-घूर

दाना चुग चिड़िया उड़ जाएगी फ़ुर्र

जूता भी घिस कर बोलता चुर्र

बहती हवा भी बांस से टकराती सुर्र

गुरू का गुरूर है मन का सूरूर

तन का फितूर पैदा करती माया जरूर

लोमड़ी को न मिले तो खट्टे हैं अंगूर

वासना पैदा करती जन्नत की हूर

पानी में आग लगाने को बेताब कोहिनूर

अजब है लीला समझ से संबंध है दूर-दूर

अंह है विकराल फिर कैसे समझौता हो मंजूर

अनमोल होता है एक चुटकी सिंदूर

इसीलिए तो सिंदूर श्रृंगार करता लंगूर

गुरू की पूर्ण दृष्टि हरती बुद्ध का क्रूर

कन्हैया की रासलीला भी देखता सूर

गुरू भाव की शक्ति नशा का नशा चूर-चूर

210520240101TUESDAY

गरल का मर्म

शुन्य ने गरल पिया तो हुआ अनंत का जन्म

माया ने ली करवट तो फैलने लगा भ्रम

स्वरभानु ने समझा मोहिनी के अमृत बांटने का मर्म

देव रूप धारण कर अमृत पान कर पूर्ण किया कर्म

अनहोनी को होनी, होनी को अनहोनी करना राहु का धर्म

छल का जवाब छल ही होता है इसमें कैसी शर्म

चंद्र और सूर्य को ग्रहण लगा फैलाता पराक्रम

उसको सदा ही बलवान बनाता जो रहता नरम

त्वरित फैसले की क्षमता बढ़ा साथ देता हरदम

समझने का है फेर पहचानो राहु नहीं किसी से कम

सीधी चाल चलने से केतु लहराता परचम

राहु की ठोकर केतु का आशीर्वाद समझो तो कम से कम

तीसरे नेत्र से न्याय करते भोले होते बम बम

नटराज का मोहक नृत्य डमरू बजता डम डम

देव दानव भूत प्रेत गंधर्व किन्नर भी नाचे छम छम

जब इंद्र देव भी सावन में बरसाते पानी झमाझम

इति गरल उवाच:- डॉ मनीष कुमार

तारीख:- २७/०५/२०२५, पल:- २२:१५

वार:- मंगलवार

मैं कौन हूं

मैं कौन हूं एक प्रश्न एक उत्तर
दिल में उठता तुफान हूं या कबूतर
धरती पर बोझ हूं या फूलों में इत्तर
गिरगिट को देखकर महसूस होता अक्सर
विविध रंग देव दानव में नहीं कोई अंतर
मैं से निकला जब मैं बाहर
कौन था वो कुण्डली के अंदर
कस्तुरी की महक से भटक कर
व्यर्थ की माया में मैं का उठा बवंडर
अफसोस से हाथ मलता रह गया सिकंदर
गज के बल पोरस न घुसने दिया अंदर
सत्ता के लोभ में फंसा छछुंदर
देख सेल्युकस की कन्या सुंदर
नई चाल से मैं में घुसा समन्दर
घुस कर सबसे पहले बदला कलन्डर
दाना चुग कर अब फंस गया कबूतर
मैं कौन हूं के सवालों में उलझकर
तुफान भी फंस गया दिल बदल कर
फूलों में क्षोभ हुआ धरती में दबकर
फिर से गुलाम हुआ मुकद्दर का सिकंदर
चालें सब पुरानी इतिहास देखता हंसकर
मैं कौन हूं सिर्फ एक ही उत्तर
कौन रहता है हमेशा कुण्डली के अंदर

020620240154SUNDAY

गोरख बानी

खुदा के नियम

जिंदगी के नियम हैं बड़े सख्त, मानोगे तो मिलेगा सबसे बड़ा तख्त
मंजिल की तलाश में भटकता हर शख्स, कुण्डल में ही छिपा हुआ है वो नक्श
आत्मा शरीर और मन का मिलन, आत्मविश्वास से मेहनत को कर नमन
उठो जागो प्रकृति को मान गुरु, बिना हिचक कर तू कर्म शुरू
भाग्य और फल की चिंता छोड़कर, समय को साध हठ से मोड़कर
खुदी को कर बुलंद इतना, खुदा खुद पुछे बता क्या है तेरा सपना
खुदा में नहीं इतनी नादानी, स्वीकार नहीं करता मासूमों की कुर्बानी
अहंकार और दिखावों की दिवार, खुदा रहता मजहबों की सीमा के पार
जगत का करने को कल्याण, खुदा ने किया इस जगत का निर्माण
समझ की समझ का फेर है, खुदा के घर देर है पर अंधेर नहीं
खुदा ने कहा कर उसकी कुर्बानी, जो है तेरी सबसे प्रिय निशानी
सबकी प्रिय निशानी तो ही खुदा है, तभी तो वो सबसे जुदा है
मांगा उसने तुझसे क्या था, सबने उसे समझ कर रखा क्या था
खुदा को चाहिए थी एक मोहब्बत, पर बदले में मिली उसको तोहमत
नहीं करता भेद किसी बंदे या बंदी में, मोहब्बत नहीं होती गंदगी में
मोहब्बत होती है सादगी में, यही सख्त नियम है खुदा की जिंदगी में

इति खुदा उवाच:- डॉ मनीष कुमार
तारीख:- ०८/०६/२०२५, पल:- ००:५१ छण
वार:- रविवार

LONE SOLDIER

There was a loud whisper
From the embryo of Mother Nature
Created all joys makes her happier
And gave birth to LONE SOLDIER
Raising him was a challenge
To make strong against all change
Milking from breast she arrange
Teaching skills to fight the Strange
Care and love she gifted to child
Jealousy and hate make him wild
But the journey was not mild
Every stranger gets him filed
Nothing is impossible was the mantra
Black Magic was used as Tantra
Artificial intelligence was a weapon Ultra
Lust and GREEDS were topped as Extra
Thugs and dacoits became respected
Honesty and integrity were rejected
Simplicity of women totally molested
Lone Soldier now was suspected
Life of Lone Soldier was interesting
Remain calm in ever harassing
Real time drama was featuring
That makes Lone Soldier Keep Smiling

290720240323MONDAY

क्रिसमस उपहार

धर्म युद्ध की बजी रणभेरी अस्त्र उठा लो अर्जुन
अधर्मी नहीं होता अपना सिर्फ अपने मन की सुन
रणक्षेत्र में निशाना साध मार दुश्मन को चुन चुन
अवसर बहुत दिया रणक्षेत्र में अब तो बहेगा खून
छल बल भी साथ नहीं देता वासना जब करती अंधी
दिखता नहीं धर्म का चक्र क्यों करें अधर्म से संधी
अहंकार की आग ही काफी जलाती है सारी गंदगी
धर्म स्थापना करने को ही ईश्वर ने दी है ये जिंदगी
रंगभेद भेदभाव में बर्बाद कर अब पछताए होता क्या
जीवन के अनमोल उपहार नष्ट कर अंतिम समय रोया
पश्चाताप करने का बहाना बनाकर क्यों पाप नहीं धोया
अहसास होता है सबकुछ हार कर क्या मिला क्या खोया
इतिहास सदा रहता जीवित पढ़ाने को हर अनमोल पाठ
सबक याद कर ले खाकर ठोकर तब रहेंगे सारे ठाट बाट
मिट्टी में ही मिलना चाहें जितना भी कर ले बंदर बांट
कर्मों का हिसाब ही साथ जाता ईश्वर ही करते काट छांट
हर त्यौहार का मतलब होता जीवन को संजीवनी देना
धर्म-कर्म ही हर परिवार की सफलता इसे याद रखना
प्रकृति भी खुश होती देखकर अपने बच्चों का चहकना
संपूर्ण ब्रह्मांड में धर्म की जीत है मनीष का यही सपना

इति डॉ मनीष कुमार रात्रि संवाद सांता क्लॉज से, मैरी क्रिसमस,
दिनांक: २५/१२/२०२५

तेरह तेरह तेरा कसूर

तेरह तेरह तेरा कसूर, बनकर एक नासूर
सोचा था दाल अरहर, निकली तू दाल मसूर
शुक्रवार को शुरू वार, फिर न मिले ऐसा ससूर
मुंह में राम बगल में छुरी, घायल हो गई ससूरी
सारी खुदाई एक तरफ, जोरू का भाई दूसरी तरफ
जग हंसाई में हो माहिर, शिकायत करें किस शहर
सैर पर निकले ढूंढने घरौंदा, पीछे पड़े हजार परिंदा
जिंदगानी भी गर रही, तो नौजवानी फिर से कहां
बुद्धु लीला में फंसाया, बेटी ने तो जान-माल बचाया
एक तरफ है मयकदा, दूसरी तरफ जाने से ही फायदा
घर घर की यही कहानी, नौकरियां ढूंढ़ती जवानी
हम तो ठहरे परदेसी, आशीर्वाद बरसाते बिदेशी
अग्निपथ पर जलते कदम, ठहरने का न है दम
फिर शिकायत न करें दर्ज, तीन तेरह को है हर्ज
हर्जाना भरने को है तैयार, मौका दो तिसरी बार
कांटों से भरा है सफर, साथ नहीं कोई हमसफर
तेरह तेरह तेरा कसूर, हम तो हैं शुरू से बेकसूर
बचपन की गई यारी, अब तो पचपन की तैयारी

- घायल घरौंदा का एक परिंदा: -

डॉ मनीष कुमार 13022026शुक्रवार१६२७

चलते फिरते उम्मीद

चलता फिरता रहे मंदिर, मस्जिद,
गिरजाघर, गुरूद्वारा, हो सबकी जिद।
सिखने सिखाने की हो तमन्ना,
प्रकृति की है अद्‌भुत कामना।
दिवारों भवनों में कैद देवी देवता,
धरा दिखाती हरियाली का रास्ता।
स्वच्छ जल तलाशती जिंदगानी,
अंहकारी फेंकते पूजा का पानी।
होलिका रंग बिरंगी होली जाती,
सूनामी की तरह मेरी आपबीती।
यही है बावनवें उम्र का पड़ाव,
तिरपनवां का आगाज खत्म दूराव।
चलते फिरते रहना ही काम,
उम्मीद ही देती सारे आराम।

: - सात तीन बीस छब्बीस, सत्तु पराठा हो खस्सी
डॉ मनीष कुमार मनावत, शनिदेव की बरसी
छण: २३२१🙏🌹😎

गोरख बानी

डॉ मनीष कुमार की पाठशाला

एक अनजानी यात्रा, एक अनजान सफर की कहानी ।
कुछ प्राकृतिक मात्रा, मेरी कविताओं की गोरख बानी ।।

होनी को टाल नहीं सकते, पर कैमरे में कैद कर सके ।
यही आशीर्वाद प्राप्त करते, सच्चाई कहीं भी न रूके ।।

जीवन के अनगिनत मोड़, गुरू ने दिया सबका तोड़ ।
हर मोह माया पीछे छोड़, अब समाप्त हुई अंधी दौड़।।

भूखे पेट न भजन होई गोपाला, वासना लीलती हर हाला ।
अब्दुल्ला गोविंदा आला रे आला, शुन्य बुझाती हर ज्वाला ।।

डॉ मनीष कुमार की पाठशाला, लगाती हर जुबान पर ताला ।
प्रकृति की रासलीला, अन्नपूर्णा लगाती हर छण भोजशाला ।।

सौजन्य: - विज्ञान और अप्राकृतिक बुद्धु लीला (ARTIFICIAL INTELLIGENCE DRAMA~AID), क्योंकि भगवान जुआ नाहीं खेलला

13 views Mar 10, 2026 SUSUWAHI

🙈🎲😊😊□😊🤔😱😎🌹🔥🎯🕊□IN

गोरख बानी

कृष्ण ने गीता के माध्यम से बच्चों को क्या समझाया है वाह

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" श्रीमद्भगवद्गीता का एक प्रसिद्ध श्लोक (अध्याय 2, श्लोक 47) है, जिसका अर्थ है कि

हे मां आप फल की चिंता मत करो (मा फलेषु कदाचन□😜😉□□), कर्म करती रहो जिंदगी भर अपने अधिकार के लिए (कर्मण्येवाधिकारस्ते) ।।।

digitally signed today on dated 11/03/2026, Wednesday

Dr. Manish Kumar